IJAER/July- August 2015/Volume-4/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

बीकानेर के शासकों व परिजनों की छतरियाँ

डॉ. विद्यानन्द सिंह
व्याख्याता (चयनित वेतनमान)
राजकीय महाविद्यालय, सूरतगढ़

बीकानेर राज्य राजपूताने का एक महत्वपूर्ण राज्य था। बीकानेर के प्रथम चार शासकों को राव उपाधि से संबोधित किया जाता था। जिनकी छतरियाँ बीकानेर के प्राचीन गढ़ व लक्ष्मीनाथ मंदिर के पास बीकाजी की टेकरी में है। बीकानेर के शासकों के स्मारक देवीकुण्ड सागर या कल्याण सागर पर स्थित हैं जो बीकानेर के पूर्व में 5 मील दूर पर स्थित है। बहुत से स्मारक इस तालाब के पूर्व व पश्चिमी किनारे पर स्थित है। जो कि लाल पत्थर व संगमरमर से बने हैं। इस स्थान पर राव कल्याणमल (1539–1571) से लेकर बीकानेर के अंतिम शासक स्वर्गीय महाराजा शार्दूलसिंह तक के शासकों, उनकी रानियों तथा राजकुमारों आदि की छतरियाँ हैं। इसके अलावा शार्दूलसिंहजी के पश्चात् करणीसिंहजी, नरेन्द्रसिंहजी व अन्य परिजनों की छतरियाँ उपलब्ध है। सभी छतरियों का स्थापत्य व उनमें की गई चित्रकारी अनुपम है जो यहाँ के शासकों की कलाप्रियता को भी प्रदर्शित करती है। प्रत्येक छतरियों में शिलालेख, पादुका लेख इत्यादि प्राप्त होते हैं जिनसे उनके शासनकाल की जानकारी मिलती है। कल्याण सागर या देवीकुण्ड सागर में स्थित छतरियाँ तालाब के पास चार ब्लॉक (चार दीवारी से निर्मित) में स्थित है। राव बीकाजी की टेकरी स्थित छतरियों व कल्याण सागर (देवीकुण्ड सागर) में स्थित राज परिवार की छतरियों का विवेचन अग्रांकित हैः–

बीकाजी की टेकरी

राव बीकाजी की टेकरी बीकानेर के दक्षिण–पश्चिम छोर पर स्थित है। चार–दिवारी से घिरा यह स्मारक 16वीं शताब्दी का है। यहाँ बीकानेर के संस्थापक शासक राव बीका (1438–1504 ई.), राव नरा (1504–1505 ई.), राव लूणकरण (1505–1526 ई.) एवं राव जैतसी (1526–1542 ई.) की शिलालेख युक्त समारक छतरियाँ एवं अन्य कक्ष निर्मित है। राव नरा व राव लूणकर्ण की छतरी के पीछे कक्ष में तीन गुम्बद से बना एक कक्ष है, जिसमें रानियों के पादुकृा लेख है।

राव बीका जोधपुर के शासक राव जोधा के ज्येष्ठ पुत्र थे। वे अपने लिए राज्य की स्थापना के उद्देश्य से इस क्षेत्र में आये तथा कुछ समय राती घाटी नामक स्थान पर पड़ाव डाला और अपने सलाहकारों से परामर्श कर उन्होंने यहाँ एक किले की नींव रखी। इसी राती घाटी नामक ऐतिहासिक स्थान को आज बीकाजी की टेकरी के नाम से जाना जाता है।

1. राव बीकाजी की छतरी :–

वि.सं. – 1561,

ई. – 1504

शक – 1426

यह छतरी बीकानेर के प्रसिद्ध लक्ष्मीनाथजी मंदिर के पास, बीकाजी की टेकरी में स्थित है। राव बीका का स्मारक (छतरी) मूल रूप से लाल पत्थर से निर्मित था जिस सन् 1916 में संगमरमर के पत्थर से पहले की तरह पुनः निर्मित किया गया।[1]

छतरी में सफेद संगमरमर से निर्मित देवली प्रतिष्ठित है। लेख की लम्बाई 3 फुट 6.5 इंच, चौड़ाई 1 फुट 5 इंच है तथा लेख का अधार 2 फुट 4 इंच लम्बा, 1 फुट 2 इंच ऊँचा है। **लेख के अनुसार** – स्मारक लेख के ऊपर एक घुड़सवार (राव बीका) व उसके अग्रभाग में दो धर्म पत्नियों तथा पीछे एक व नीचे चार भोग्य पत्नियों की मूर्तियाँ उभारी हुई है। सूर्य व चंद्र शिलालेख पर उत्कीर्ण है। लेख के अनुसार वि.सं. 1561 आषाढ़ शुक्ल पक्ष 5, सोमवार को राव जोधा के पुत्र व बीकानेर के संस्थापक राव श्री बीका वर्मा के साथ उनकी दो धर्मपत्नियों व 5 भोग्य पत्नियों के परमधाम मुक्ति प्राप्त करने का उल्लेख है।[2] राव बीका द्वारा अपने पिता के वचन सुन सामंतों के साथ मिलकर शत्रुओं का दमन कर विक्रमाखण्डपुर[3] का निर्माण करने का उल्लेख इस लेख में है। राव बीका की माँ का नाम नोरंगदे तथा बीका का विरुद व नाम श्री विक्रमोविक्रम उत्कीर्ण है। राव बीका के राठौड़ वंश का उल्लेख है तथा राठौड़ राव अपने नाम के साथ क्षत्रियों की उपाधि 'वर्मा (वर्म्मा)' लगाते थे।[4]

यह छतरी 15 फुट 4 इंच लंबे, 14 फुट 10 इंच चौड़े व 6 फुट ऊँची वेदिका पर निर्मित है। वेदिका लाल पत्थर से निर्मित है जिस पर बंदनवारनुमा डिजाइन बनी है। छतरी का चत्वर 6 फुट 3 इंच लम्बा व चौड़ा तथा 3 फुट 6 इंच ऊँचा है। स्तम्भ सादे हैं। चार स्तम्भ है व प्रत्येक स्तम्भ 6 फुट 2 इंच लम्बा है। छतरी

अष्टकोणीय है तथा अंदर दोहरे पुष्प की आकृति बनी है। बंगाली शैली के छज्जे के पश्चात् फूलों की आकृति व बंदनवार से सज्जित ड्रम (ग्रीवा) है। गुम्बद के आधार पर इकहरी वलय, कमलाकृति है। गुम्बद के ऊपर उल्टे कमल पर गुमटी निर्मित है। छतरी अत्यधिक सुन्दर है व पर्यटकों को आकर्षित करती है।

2–3. राव लूणकर्णजी व जैतसीजी की छतरी :–

वि.सं. – 1583	वि.सं. – 1598
ई. – 1526	ई. – 1541
शक – 1448	शक – 1463
(राव लूणकर्ण)	(राव जैतसी जी)

यह छतरी बीकाजी की टेकरी में, राव बीकाजी की छतरी के पास स्थित है। छतरी का युग्म (राव लूणकर्ण व राव जैतसी स्मारक) लाल पत्थर से निर्मित है। छतरी युग्म में संगमरमर से निर्मित दो लेख है। **बाँया लेख (राव लूणकर्णजी) –** 3 फीट लम्बा व एक फुट 3 ईंच चौड़ा है तथा लेख का आधार एक फुट 9 इंच लंबा, एक फुट चौड़ा व 7 ईंच ऊँचा है। लेख के ऊपर एक घुड़सवार (राव लूणकर्ण) है जिसके ऊपर छत्र व दांये–बाँये सूर्य–चंद्र की आकृति उकेरी गयी है। घुड़सवार के आगे दो व नीचे एक स्त्री हाथ जोड़े उकेरी गयी है। लेख के अनुसार– ।। श्री गणेशाय नमः वि.सं. 1583 वैशाख कृष्णा द्वितीया, शनिवार को राव बीका के पुत्र राव जी श्री लूणकर्ण वर्मा के साथ उनकी तीन धर्मपत्नियों के दिवंगत होने का उल्लेख है। शास्त्रोक्त विधि से छतरी की प्रतिष्ठा की गई।[5]

दाँया लेख 3 फुट 2 इंच लम्बा व एक फुट 5 इंच चौड़ा है। लेख का आधार 2 फुट लम्बा 1 फुट 1 इंच चौड़ा व 6.5 इंच ऊँचा है। लेख के ऊपर एक व्यक्ति घोड़े पर सवार (राव जैतसी) है, दाँये–बाँये सूर्य–चंद्र उत्कीर्ण है। घुड़सवार के आगे तीन (पत्नियाँ) व नीचे तीन (भोग्य पत्नियाँ) स्त्रियों की आकृति को उकेरा गया है। लेख के अनुसार–।। श्री गणेश कुल देव्याः प्रसादात्।। वि.सं. 1598 फाल्गुन शुक्ल पक्ष।।, शुक्रवार को श्री लूणकरण के पुत्र राव जैतसिंह के साथ तीन धर्मपत्नी व तीन भोग्य पत्नियों की मृत्यु के उपरांत शास्त्रोक्त विधि से छतरी के निर्माण का उल्लेख है।[6]

लाल पत्थर से निर्मित इस छतरी युग्म का निर्माण 20 फुट 9 इंच लम्बे, 16 फुट 11 इंच चौड़े व लगभग 3 फुट ऊँची वेदिका पर निर्मित की गई है। चत्वर पर बंदनवारनुमा डिजाइन बनी है। चत्वर 11 फुट 7 इंच लम्बा, 6 फुट 3 ईंच चौड़ा व 2 फुट 6 इंच ऊँचा है। छतरी युग्म में 6 स्तम्भ है, प्रत्येक स्तम्भ 5 फुट 10 ईंच लम्बा है। स्तम्भ के आधार पर डिजाइन बनी है। छतरियों का गुम्बद अष्टकोणीय है। छतरी के गुम्बद में चूने पर पेण्टिंग की गई है जो अब लगभग खत्म हो चुकी है। बंगाली शैली के छज्जे के बाद अलंकृत ड्रम है। गुम्बद के आधार पर कमलाकृति व गुमटी बनाई गई है। छतरी युग्म के पीछे कक्ष में तीन गुम्बदों से युक्त एक कक्ष है जिसमें रानियों के 6 जोड़ी पादुका–लेख बने हैं।

4. कंवर भूपालजी की छतरी :–

वि.सं. – 1634

ई. – 1577

शक – 1499

यह छतरी युग्म राव बीकाजी की टेकरी में राव लूणकर्ण व राव जैतसी की छतरी के दांयी ओर बना हुआ है। यह छतरी लाल पत्थर से निर्मित है। बांयी तरफ लाल पत्थर से निर्मित शिलालेख में अश्वारूढ एक व्यक्ति के आगे तीन स्त्रियाँ हाथ जोड़े खड़ी है। **लेख के अनुसार –** संवत् 1634 वर्ष फागुण सुदि 8 दिने शनिवार कंवर भुपालजी महासती मनोरथदे भटियाणी महासती माणिकदे कछवाही महासती महमादे कछवाही सती सहतदेव (लोक) गता।[7] छतरी के दांये गुम्बद के नीचे एक विशाल लेख है जिसमें एक अश्वारूढ व्यक्ति के आगे दो स्त्रियाँ हाथ जोड़े खड़ी है। लेख अपठनीय है।

छतरी युग्म का चत्वर 16 फुट 4 इंच लम्बा, 8 फुट चौड़ा व 4 फुट 2 ईंच ऊँचा है। छतरी युग्म में 6 स्तम्भ है जिस पर 4–8 के वर्ग की डिजाइन बनी है। स्तम्भ के आधार पर फूल–पत्ती उकेरी गई है। छतरी–युग्म अष्टकोणीय है। छतरी के गुम्बद में दोहरे पुष्प की आकृति बनी हुई है। प्रत्येक स्तम्भ लगभग 5.5 फुट का है। ड्रम के अंदर व बाहर बंदनवारनुमा डिजाइन बनी है। गुम्बद के आधार में वलय के ऊपर नीचे पत्तियों की डिजाइन बनी है। कमलाकृति के गुम्बद पर उल्टा कमल व गुमटी बनी हुई है।

इस छतरी के पास एक छतरीनुमा कक्ष और बना है जिसमें कोई लेख प्राप्त नहीं हुआ है। छतरियों के पास ऊपर व नीचे कुण्ड बना हुआ है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि पँच तत्वों की उपस्थिति में छतरियों का निर्माण किया जाता है।

5. राव कल्याणमलजी की छतरी :–

वि.सं. – 1630

ई. – 1573

शक – 1495

राव जैतसी के ज्येष्ठ पुत्र राव[8] कल्याणमल का जन्म सोढी राणी कश्मीरदे से वि.सं. 1575 माघ सुदि 6 (ई.सं.) ता. 6 जनवरी को हुआ था[9] तथा मृत्यु 24 जनवरी, 1574 को हुई। यह छतरी लाल पत्थर व चूने से निर्मित है जिस पर वर्तमान में सफेद रंग कर दिया गया है। छतरी में पीले पत्थर से निर्मित स्तम्भ (देवली) है। यह पीले पत्थर से निर्मित सुन्दरतम देवलियों में से एक है। इस विशाल देवली लेख के ऊपरी भाग में एक घुड़सवार (महाराजा का प्रतीक) को उभारा गया है, उसके सम्मुख चार महारानियों की हाथ जोड़े मूर्तियाँ उभारी हुई है तथा एक ओलगण को नृत्य मुद्रा में दिखाया गया है। महाराजधिराज राइ (राव) कल्याणमल के साथ सोनगरी राणी रत्नाजी, भटियाणी प्रेमा, भटियाणी लिंगा, गुहिलोतणी हाँसां, एक ओलगण पहयु एवं दस पातरियाँ जीउ, जौमला, बुधरांई, कांमसेजा, रंगराई, पदमावती, सुधडराई, माँणवती, रूपमंजरी, रंगमाला के सतियाँ हुई व बैकुण्ठ को प्राप्त हुई। सतम्भ लेख के अनुसार–।। श्री राम।। संवत् 1630 वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे बीज दिने

2 सोमवारे बीकानेर मध्ये पर्म पवित्र महाराधिराज राइ (राव) श्री कल्याणमल सत्य सहतेभ्य जवतस शोनिगरी राणी श्री रत्नाजी भटियाणी प्रेमा भटियाणी लिंगा गुहिलोतणी हांसां उलगण वा पात्रा स्तेभ्य वैकुण्ठ लोके प्राप्त सुभं भवतु कल्याणमस्तुः।[10]

यह छतरी 5 फुट ऊँची वेदिका पर निर्मित है। इसका चत्वर लगभग 10 फुट लम्बा, 9 फुट 8 इंच चौड़ा, 4 फुट 7 इंच ऊँचा है। छतरी में 4 स्तम्भ है। प्रत्येक स्तम्भ 6 फुट 6 इंच लम्बा है। छतरी में अष्टकोण है। चार मुखी टोडी व उष्णीश अनलंकृत है। गुम्बद के गर्भगृह में चार वलय व ऊभरी हुई फूलों की डिजाइन बनी हुई है। छज्जा, अलंकृत ड्रम, फिर एक वलय, कमलाकृति का गुम्बद, उल्टा कमल व शंकुनुमा गुमटी है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. स्मारकों का इतिहास–रतनलाल मिश्र, इनाश्री पब्लिशर्स, जयपुर, 2013, पृ–99।

2- ;पद्ध दयालदास की ख्यात; जिल्द पत्र–2, पत्र–7।
;पपद्ध गजेटियर ऑफ दि बीकानेर स्टेट–पाउलेट, पृ.–101।

3- बीकानेर को विक्रमाखण्डपुर कहा गया है।

4- राव बीका की छतरी का लेख–1561 वि.सं.।

5- ;पद्ध राव लूणकर्ण की छतरी का लेख–वि.सं.–1583।
;पपद्ध दयालदास की ख्यात–जिल्द–2, पत्र–9।
;पपपद्ध बांकीदास–ऐतिहासिक बातें–संख्या–2258
;पअद्ध गजेटियर ऑफ दि बीकानेर स्टेट–पाउलेट–पृ. 12।

6- ;पद्ध राव जैतसी की छतरी का लेख, वि.सं. 1598।
;पपद्ध दयालदास की ख्यात–जिल्द–2, पत्र–16।
;पपपद्ध गजेटियर ऑफ दि बीकानेर स्टेट–पाउलेट–पृ. 16।
;पअद्ध गजेटियर ऑफ दि बीकानेर स्टेट–पाउलेट–पृ. 12।

7- ;पद्ध कंवर भूपाल की छतरी का लेख–वि.सं. 1634।
;पपद्ध कंवर भूपाल महाराजा रायसिंह के पुत्र थे। रायसिंह के जीवनकाल में ही कंवर भूपाल का निधन हो गया था। (बीकानेर के शिलालेख–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व्यास, परमानंद पब्लिकेशन्स, बीकानेर–1990, पृ–7)

8- छतरी लेख में महाराजाधिराज के साथ राइ (राव) उपाधि का उल्लेख है।

9- दयाल दास का ख्यात–जिल्द 2, पत्र–16, मुंशी देवी प्रसाद–राव कल्याणमलजी की जीवन चरित्र पृ. –85।

10- महाराजा कल्याणमलजी की छतरी का लेख–वि.सं. 1630। बीकानेर के राजाओं के सोनगरों, गुहिलोतों व भाटियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध थे। बीकानेर के स्वर्णकार इस देवली के प्रति विशेष आस्था रखते हैं तथा प्रतिवर्ष यहाँ मेला भी लगता है।